विदर्भ स्वाभिमान

संपादक - सुभाषचंद्र जमुनाप्रसाद दुबे

9423426199/8855019189.

❖ अमरावती, 6 से 11 फरवरी 2025 ❖वर्ष :15 ❖ अंक- 33 ❖ पृष्ठ 8 ❖ मूल्य - 4/-पोस्टल रजि.नं ATI/RNP/268/2025-2027 ❖डाक : शुक्रवार-शनिवार

बाबूजी के आदर्श विचार

खुशियों के कुछ टिप्स

आज के दौर में अपनों से भी बहुत अधिक अपेक्षा नहीं रखना. वैसे भी अपने ही अधिक स्वार्थी होते हैं. जब तक काम लायक व्यक्ति रहता है, तभी तक उसकी कदर रहती है. वर्ना अपने ही माता-पिता को कोई वृद्धाश्रम में नहीं छोड़कर आता है. प्रेम करो लेकिन मोह से सदैव बचते रहें.

पेज नंबर 2

बेरोजगारों के साथ किया जाता मजाक है गंभीर

पेज नं.6

बुजुर्ग माता-पिता को जीने की राह सिखा गए पूज्य शिव गुरू शर्मा महाराज

पेज क्र.7

अपना जीवन गरीब भक्तों को समर्पित करने वाले गुल्हाने दम्पति की सराहना

पेज नं. 8

श्री व्यंकटेशधाम में जारी है ब्रह्मोत्सव, हजारों भक्त कर रहे दर्शन, 10 को रथयात्रा

धर्म, मानवता और संस्कारों को बढ़ावा देने वाला, पूरी तरह से सकारात्मक खबरों को प्राथमिकता देने वाला देश का एकमात्र हिंदी साप्ताहिक अखबार

आदर्श किसानी है सभी के लिए प्रेरणादायी

विशेष प्रतिनिधि,5 फरवरी

मुंबई- कहते हैं कि अगर कुछ करने की तैयारी हो तो हर क्षेत्र से सफलता हासिल की जा सकती है. अमरावती के अचलपुर में एक किसान ने जहां तुअर और कपास की फसल से चमत्कारी नतीजा प्राप्त किया, वहीं दूसरी ओर सैयद मुजफ्फर हुसैन किसानों के लिए प्रेरणा का स्थान बने हैं. खेती को किस तरह बेहतरीन तरीके से करते हुए भाग्य को बदला जा सकता है, उसका उदाहरण वे बने हैं. बदलते मौसम की मार पर अपना वश नहीं चल सकता. लेकिन मौसम के साथ तालमेल बिठाकर तो चला ही जा सकता है. किसानों की सर्वाधिक आत्महत्या वाले सूखाग्रस्त क्षेत्र विदर्भ में इसी फार्मूले पर चलने की शुरुआत

कर चुके सैयद मुजफ्फर हुसैन महाराष्ट्र के किसानों के लिए आकर्षण का केंद्र बन चुके हैं.उनके 150 एकड़ खेतों में विदर्भ की परंपरागत फसलों से इतर मसालों एवं चुनिंदा फलों की खेती पूरी तरह से प्राकृतिक एवं वैज्ञानिक तरीकों से की जा रही है. ताकि अलग-अलग फसलों से साल भर कुछ न कुछ आमदनी होती रहे.

महाराष्ट्र में दो बार विधान परिषद के सदस्य रहे सैयद मुजफ्फर हुसैन पेशे से भवननिर्माता हैं, और मुंबई के निकट मीरा रोड में अपने पिता सैयद नजर हुसैन द्वारा टाउनशिप विकसित करने के व्यवसाय को ही आगे बढ़ा रहे थे. लेकिन महाराष्ट्र के किसानों की आत्महत्याओं के समाचार उन्हें लगातार परेशान करते रहते थे.

इसलिए उन्होंने कुछ दशक पहले नागपुर से 50 किमी. दूर रामटेक के छात्रापुर गांव में धीरे-धीरे खरीदी गई करीब 150 एकड़ ऊबड़-खाबड़ भूमि को अपनी प्रयोगभूमि बनाने का निश्चय कर लिया.

कम लागत में आत्मनिर्भर कृषि प्रणाली विकसित करने का लक्ष्य- नागपुर अपने स्वादिष्ट मीठे संतरों के लिए जाना जाता है, तो दूसरी ओर विदर्भ के किसान कपास एवं सोयाबीन जैसी नकदी फसलें बोकर अपनी आर्थिक जरूरतें पूरी करते हैं. लेकिन मौसम की मार से ऐसी एकल फसलें उन्हें अक्सर मुश्किल में डाल देती हैं, और वे बैंक या साहूकारों से लिया कर्ज भी **शेष पेज 2 पर**

दिल्ली विधानसभा चुनाव में 60.45 फीसदी ने किया मतदान

नई दिल्ली-दिल्ली विधानसभा चुनाव में लगातार दूसरी बार मतदान के प्रतिशत में गिरावट हुई और पिछले तीन चुनावों के मुकाबले इस बार सबसे कम मतदान हुआ. इसका कारण यह है कि पिछले तीन चुनावों जैसा इस बार मतदाताओं में उत्साह नहीं था.इस वजह से दिल्ली के एक भी विधानसभा क्षेत्र में भी मतदान का आंकड़ा 70 प्रतिशत नहीं पहुंच पाया और 28 विधानसभा क्षेत्रों में मतदान 60 प्रतिशत से भी कम रहा है.पश्चिमी दिल्ली के सुभाष नगर स्थित लिए मतदान केंद्र मे जोश के साथ कतार लग गई थी.वृद्ध , महिलाएं व युवाओं में मतदान को लेकर अपार उत्साह दिखाई दिया.इस बार मुस्तफाबाद, सीलमपुर, गोकलपुरी, बाबरपुर, त्रिलोकपुरी, सीमापुरी, मटियामहल व रोहतास नगर इन आठ विधानसभा क्षेत्रों में 65 प्रतिशत से अधिक मतदान जरूर रहा है, लेकिन बाबरपुर को छोड़कर बाकी क्षेत्रों में मत प्रतिशत घटा है.दिल्ली में कई सीटों पर मतदान में कमी आयी है. इसको लेकर लोगों में जबर्दस्त नाराजी देखी जा रही है. कुल 60 फीसदी से अधिक मतदान यहां पर दर्ज किया गया है.

पिछली बार 17 विधानसभा क्षेत्रों में 65 प्रतिशत से अधिक मतदान रहा था. जिसमें से बल्लीमारान, सीलमपुर, गोलकपुरी, मुस्तफाबाद व मटियामहल इन पांच विधानसभा क्षेत्रों में मतदान 70 प्रतिशत से ज्यादा था. बल्लीमारान, सदर बाजार जैसे इलाकों में मतदान काफी घटा है.

श्री वेंकटाचल की महिमा

कलयुग के देवता भगवान व्यंकटेश्वर बालाजी के करोड़ों भक्त विश्वभर में फैले हैं. पिछले 25 साल से उनकी भक्ति से क्या-क्या अनुभव किया है, इसको ध्यान में रखते हुए अनाथों के नाथ, निराधारों के आधार तिरूपति निवासा भगवान व्यंकटेश्वर की कथा की पांचवी किश्त पेज 4 पर अवश्य पढ़ें. जय गोविंदा,जय

विदर्भ स्वाभिमान

संपादकीय

सचमुच अत्याधिक खतरनाक है आदिवासी क्षेत्रों की स्थिति

केन्द्र तथा राज्य सरकार द्वारा देश के आदिवासियों तथा दीन-दलितों पीड़ितों के कल्याण के लिए अनगिनत योजनाएं चलाई जाती हैं. लेकिन दुर्भाग्य की बात है कि उनकी योजनाओं का लाभ उन्हें तो नहीं मिल पाता है लेकिन योजनाओं की राशि से चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी से लेकर विभाग प्रमुख तक पूरी तरह से मालामाल हो रहे हैं. संवेदनशीलता तो जैसे खत्म हो गई है. पाप का डर तो जैसे गायब हो गया है. कानून का डर तो पहले ही गायब हो गया है. ग्राम पंचायतों को लाखों रूपए की निधि जनहित में सुविधाओं के लिए दिया जाता है. लेकिन कितनी बिडंबना है कि ग्राम पंचायत सदस्य से लेकर सरपंच, ग्रामसेवकों के साथ ठेकेदारों की तिकड़ी लाखों रूपए की राशि कैसे खा जाती है, इसके एक नहीं हजारों उदाहरण जिले में देखे जा सकते हैं.यही स्थिति मेलघाट में रोजगार गारंटी योजना को लेकर है.मंगलवार को अपनी दिहाड़ी के पूरे पैसे नहीं मिलने से त्रस्त होकर एक मजदूर ने घर में ही फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली. रोजगार गारंटी योजना गरीबों और आदिवासियों को काम दिलाने के लिए शुरू की गई है. लेकिन मेलघाट जैसे आदिवासी बहुल इलाके में जिस तरह से काम चलता है, वह किसी से छिपा नहीं है. सबसे हैरत तो तब होती है कि आदिवासियों के कल्याण की बात करने वाले लोगों द्वारा ही यहां उनके नाम पर दुकानदारी की जाती है. स्वयंसेवी संस्थाओं की स्थिति हम भी खुश तुम भी खुश जैसी रहने के कारण मेलघाट में आदिवासियों का पलायन और रोजगार के लिए कुछ भी करने वाली परेशानी कायम है. मंत्री अथवा मुख्यमंत्री का दौरा रहने के बाद ही यहां प्रशासन पहुंच पाता है.

कुछ महीने पहले जिलाधिकारी सौरभ कटियार ने शानदार पहल की थी. उन्हों ने पूरे प्रशासन को ही यहां लाकर खड़ा कर दिया था. सवाल यह है कि आजादी के 75 साल तक जिन गांवों में आजकल बिजली नहीं पहुंच पाई, इसकी शिकायत काटकुंभ ग्राम पंचायत की सरपंच ललिता बेठेकर द्वारा जिस तरह से राष्ट्रपति को की गई, उसको लेकर यहां की स्थिति बताने की जरूरत नहीं है. कुछ अधिकारी संवेदनशील होते हैं, ऐसे अधिकारियों को अच्छे से काम नहीं करने दिया जाता है. मेलघाट में ग्राम पंचायतों को लाखों रूपए विकास के लिए दिए जाते हैं लेकिन काम की निविदा जारी करने से लेकर काम होने तक मंजूर निधि का बंदरबांट कैसे हो जाता है, जो काम भी किया जाता है, वह कितना घटिया होता है लेकिन आज तक किसी ठेकेदार को दंडित नहीं किया जाना यहां प्रशासन की असलियत को उजागर करने के लिए काफी है.

नैतिकता का पतन,हर जगह सेटिंग

विदर्भ स्वाभिमान
www.vidrabhswabhiman.com 9423426199

जीवन में देश का सबसे अधिक महत्व होता है. जिस देश में ईमानदारी, नैतिकता, देश के प्रति समर्पण और विकास को लेकर विश्व में सबसे आगे जाने की घोषणा ही करने की नहीं बल्कि आगे बढ़ने की ललक होती है, वही देश अमेरिका बन सकता है, वही देश चीन बन सकता है. लेकिन जहां पर ग्राम पंचायत से लेकर मंत्रालय तक उक्त खूबियां गायब होती हैं, वहां हम कितने भी दावे कर लें लेकिन लक्ष्य हासिल नहीं किया जा सकता है. मेरे जीवन में सकारात्मक सोच का अत्याधिक महत्व रहा है. मैं हमेशा अच्छी सोचता हूं. लेकिन इस सच्चाई से भी कोई इंकार नहीं कर सकता है कि सकारात्मक सोच वाला एक हो और नकारात्मक सोच वाले इर्द-गिर्द हों तो उसकी सकारात्मक सोच का अर्थ नहीं रह जाता है. अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ता, ऐसा कहा जाता है. लेकिन आजकल जिस तरह से परिवार से लेकर प्रशासन तक नैतिकता मर रही है, स्वार्थ हावी हो रहा है और ईमानदारी तथा किसी के प्रति अच्छी सोच मुश्किल हो गयी है, निश्चित तौर पर यह सभी कमियां दिक्कत देती हैं लेकिन इनकी दिक्कत का पता उस समय चलता है जब जीवन का अंतिम पल आता है. जीवन भर सत्य से दूर रहने वाले इंसान के लिए राम नाम सत्य है भी लोग तब बोलते हैं जब वह सुनने लायक नहीं रहता है. हद तो तब हो जाती है कि लोग राम नाम सत्य बोलते हुए श्मशान तक जाने के बाद अर्थी जलने के बाद ही माया-मोह की बात करने लगते हैं. आमतौर पर ऐसा कहा जाता है कि श्मशान जाने के बाद वहां हंसना नहीं चाहिए. हमारे बुजुर्ग जो बहुत अधिक पढ़े-लिखे नहीं थे लेकिन इन भारतीय संस्कृति और शास्त्र वचनों का पालन ईमानदारी से करते थे. यही कारण था कि उनका जीवनमान वैद्यकीय क्षेत्र में बिना किसी क्रांति के 100-120 साल तक हुआ करता था. उनमें नैतिकता थी, अपनी गलती स्वीकारने की मानसिकता थी, किसी को भी हमारी वजह से नुकसान नहीं पहुंचे, यह भावना थी. लेकिन आज नैतिकता का पाठ पढ़ाने वाले ही नैतिकता से कोसों दूर हो गए हैं. ऐसे में कौन किससे उम्मीद करे, यही सबसे बड़ा सवाल है.

परिवार का प्रेम गायब

पहले गरीबी थी लेकिन परिवार का प्रेम लोगों को खुशियां देता था. लेकिन आज बड़ा परिवार दुर्लभ हो गया है. माता-पिता की सेवा तथा उनके प्रति भावना मर गई हैं. मेरे एक मित्र बता रहे थे कि उनकी कॉलोनी में एक ऐसे बुजुर्ग माता-पिता रहते हैं, जिन्हें तीन संतानें हैं. तीनों ही विदेशों में जाकर बस गए हैं यह सज्जन जीते हैं जिएं, मरते हैं मरें, इसका उनकी संतानों पर कोई फर्क नहीं पड़ता है. प्रभु ने जब इंसान बनाया होगा तो उन्होंने भी कभी यह नहीं सोचा होगा कि आखिर इतना भी स्वाथी हो सकता है. कहते हैं कि जो अपनों का नहीं होता है वह दुनिया में किसी का नहीं हो सकता है. पारिवारिक और सामाजिक विखराव निश्चित तौर पर आने वाली पीढ़ियों को जीते-जी मारने का काम करेगा. शिक्षा में ही संस्कार को समाहित करने की नौबत आज आ गई है. जिनका जीवन संवारने के लिए माता-पिता ने पूरा जीवन समर्पित कर दिया, आज उच्च शिक्षित बेटे-बेटी को अगर उनसे बात करने का समय नहीं है तो इसके लिए बच्चे ही दोषी नहीं हैं. माता-पिता भी दोषी हैं जो बच्चे को सबसे आगे बढ़ाने के चक्कर में स्वयं से ही दूर करते गए. आजकल धन-दौलत रहने के बाद भी खुशी रहेगी, ऐसा कोई गणित नहीं रह गया. छल,कपट,हरामखोरी इस कदर बढ़ गई है कि भावनाओं का कोई महत्व ही नहीं बचा दिखाई दे रहा है. यह स्थिति आगामी समय में घर के सुख-चैन छीनेगी. कथाओं में इस पर प्रबोधन होने की जरूरत आन पड़ी है.

मुजफ्फर हुसैन की आदर्श किसानी है प्रेरणादायी

पेज 1 से जारी- वापस नहीं लौटा पाते.मुजफ्फर हुसैन ने इसका हल साल में कई फसलें, वह भी प्राकृतिक एवं वैज्ञानिक तरीकों का इस्तेमाल कर उगाने का फैसला किया, ताकि कम लागत में आत्मनिर्भर कृषि प्रणाली विकसित कर पूरे साल कुछ न कुछ आमदनी का जरिया बनाया जा सके.कुछ अलग करने के लिए उन्होंने इंडियन काउंसिल ऑफ एग्रीकल्चरल रिसर्च (आईसीएआर) के सेवानिवृत वैज्ञानिक एम.एन.वेणुगोपाल की मदद लेनी शुरू की. वेणुगोपाल कर्नाटक के मैसूर में रहते हैं. लेकिन मुजफ्फर हुसैन की खेती में गंभीर रुचि को देखते हुए वह उनका मार्गदर्शन करने के लिए राजी हो गए. मसालों की खेती में वेणुगोपाल की विशेषज्ञता के कारण उन्हें पेप्पर डाक्टर (मिर्च का डाक्टर) भी कहा जाता है.मुजफ्फर हुसैन बताते हैं कि एम.एन.वेणुगोपाल उनके आग्रह पर उनके खेत पर आए और सबसे पहले मिट्टी की जांच की, ताकि खेत की सेहत का अनुमान लगाकर वहां सही फसलें उगाई जा सकें. क्षेत्र सूखाग्रस्त है. जमीन ज्यादातर जमीन ऊबड़-खाबड़ थी.मुजफ्फर हुसैन और वेणुगोपाल दोनों की इच्छाशक्ति मजबूत थी. सबसे पहला निर्णय यह किया गया कि खेत को रासायनिक खादों से दूर रखना है. खेत की सुधारने के लिए गाय के गोबर, गोमूत्र, गुड़, बेसन और छाछ आदि से तैयार होनेवाले जीवन अमृत,घन जीवन अमृत एवं गौकृपा अमृत जैसी जैविक खादों का प्रयोग शुरू किया गया.इससे जमीन की उत्पादकता में वृद्धि हुई. खाद बनाने के लिए गोबर एवं गोमूत्र की व्यवस्था के लिए खेत पर ही एक दर्जन गौएं भी पाली गईं. सिंचाई की समस्या सुलझाने के लिए खेत में पहले से मौजूद तीन तालाबों को आपस में जोड़ गया. ताकि इन तालाबों में एकट्ठा होनेवाले बरसाती पानी का उपयोग अलग-अलग स्थानों पर अपनी सुविधानुसार किया जा सके. पानी कम खर्च हो, इसके लिए ड्रिप इरीगेशन की व्यवस्था की.

सावलापुर के किसान ने रच दिया इतिहास

अचलपुर तहसील के सावलापुर के एक किसान ने खेती में शानदार प्रगति करते हुए इतिहास रच दिया. गजानन येवकर ने शानदार उत्पादन प्राप्त कर अन्य किसानों के लिए आदर्श स्थापित करने का काम किया. सावलापुर गांव के पुलिस पाटील गजानन येवकर ने सवा हेक्टर खेत में बेहतरीन नियोजन के साथ तुअर और कपास की बुआई की. इसका बेहतरीन उत्पादन उन्हों ने हासिल किया. दो एकड़ क्षेत्र में उन्हों ने कपास और तुअर की फसल उगाई. यह बेहतरीन उत्पादन देने के साथ ही बहुगुणी साबित हुई. कृषि विशेषज्ञों की मदद से उन्हों ने सदैव समुचित उपाय करते हुए बेहतरीन उत्पादन हासिल किया. यह अन्य किसानों के लिए अनुभव वाली बात हो गई.

विदर्भ स्वाभिमान

यह समाचार पत्र मालिक, प्रकाशक,संपादक सुभाषचंद्र जमुनाप्रसाद दुबे द्वारा एस.बी.प्रिंटर्स द्वारा दत्त पैलेस गांधी चौक अमरावती में मुद्रित कर विदर्भ स्वाभिमान कार्यालय,छाया कॉलोनी,अकोली रोड,अमरावती में प्रकाशित किया गया है.मोबाइल नंबर 9423426199/8855019189 .अखबार में प्रकाशित होने वाले विभिन्न पत्र,साहित्य,लेखकों,कवियों के विचारों व तथ्यों पर आधारित होते हैं. इनसे संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है.संपादक सुभाषचंद्र जमुनाप्रसाद दुबे (संपादकीय दायित्व हेतु जिम्मेदार), मुख्य प्रबंधक- सौ.वीणा सुभाषचंद्र दुबे.Email-vidarbhäswabhiman@gmail.com.www.vidrabhswabhiman.com

धर्म और राष्ट्र धर्म ही बनाता है हर व्यक्ति को महान

दीपक बाबाराव प्रधानकर का मत मानवता की सेवा, आदर्श संस्कार ही संवारते हैं जीवन

प्रतिनिधि, 5 फरवरी

अमरावती - राष्ट्र सुरक्षित रहने पर धर्म स्वयं ही सुरक्षित रहता है. धर्म का आचरण आदर्श संस्कारों को देता है. जहां आदर्श संस्कार होते हैं, वहां इंसानियत, अपनापन होता है. यह गुण जहां होते हैं, वहीं खुशी होती है. इस आशय का मत श्री संत मुरलीधर पानसे विद्यालय व जूनियर कॉलेज के सेवानिवृत्त लिपीक दीपक बाबाराव प्रधानकर ने किया.

विदर्भ स्वाभिमान कार्यालय को दी गई सदिच्छा भेंट तथा साक्षात्कार में उन्हों ने बताया कि उनका जन्म धामणगांव रेलवे शहर में हुआ. उनकी प्राथमिक शिक्षा यहीं पर हुई. बचपन से ही पिता बाबाराव गोविंदराव प्रधानकर और मां कमलादेवी बाबाराव प्रधानकर के आदर्श संस्कारों का उन पर गहरा असर था. बचपन से पढ़ाई में मेधावी रहने वाले दीपक प्रधानकर का कहना है कि जीवन में किसी काम को कभी छोटा नहीं समझना चाहिए. स्नातक तक की शिक्षा के बाद विद्यालय में लिपीक के रूप में चयन हुआ. उनका मानना है कि जब हम ईमानदारी और समर्पण के साथ कोई काम करते हैं तो निश्चित तौर पर संस्था को लाभ मिलता है और हमें आत्मिक आनंद. खुशी से किया गया कोई भी कार्य सदैव नतीजा देता है. धर्म की जरूरत बताते हुए वे कहते हैं कि धर्म से आदर्श इन्सान बनने में मदद मिलती है. जीवन में हर मोड़ पर पत्नी किरण दीपक प्रधानकर का साथ मिला. दोनों बेटियों साहिती तथा आकृति परिवार की जहां खुशी हैं, वहीं दोनों ही बेटियों का समर्पण उन्हें अपार खुशी प्रदान करता है. वे कहते हैं कि बचपन में दिए गए संस्कार का जीवन में अत्याधिक महत्व होता है. संस्कारों की जननी माता होती है तथा पिता संतान का जीवन संवारने के लिए सदैव प्रेरित करता रहता है.

वह प्रसंग नहीं भूलेंगे

दीपक प्रधानकर के मुताबिक जीवन में की गई अच्छाई कभी बेकार नहीं जाती है, वह सम्मान लेकर आती है. रहाटगांव में एक दुर्घटना में गंभीर बस चालक को जीवनदान देने में प्रभु की प्रेरणा से महत्वपूर्ण भूमिका निभाई. जब कोई जा नहीं रहा था, स्वयं गाड़ी साइड में खड़ी कर खून से लतपथ चालक को एसटी से नीचे उतारकर बाकी लोगों की मदद से जिला अस्पताल पहुंचाया. समय पर पहुंचाने के कारण उस चालक को जीवन मिला. वे कहते हैं कि उनकी पत्नी और बच्चियों को जब यह पता चला तो उन्होंने जिला अस्पताल बुलाया और उनके चेहरे की खुशी देखकर दीपक प्रधानकर को जो आनंद हुआ, वह करोड़ों की दौलत से अधिक था. वे कहते हैं कि जब हम अच्छा सोचते हैं और करते हैं तो निश्चित तौर पर उसका फल प्रभु किसी न किसी रूप में अवश्य देते हैं, उसका इस घटना के बाद उन्हें अनुभव आया.

मानव के रूप में पैदा होने वाले हर व्यक्ति को दुनिया का मेहमान बताते हुए उन्होंने कहा कि हमारा स्वभाव ऐसा होना चाहिए कि कहीं भी सम्मान मिले. हम किस बात का अहंकार करते हैं.प्रभु ने दुनिया में भेजा है और वापस बुलाने का अधिकार भी उनके पास ही है, ऐसे में हमें बिना किसी तरह का अहंकार किए खुश रहते हुए अन्यों की खुशियों में भी योगदान देना चाहिए. इस तरह का संदेश वे देते हैं. उनका कहना है कि आदर्श संस्कारों से ही आदर्श इन्सान पैदा होता है. ऐसे में शिक्षा के साथ ही बचपन में आदर्श संस्कारों पर विशेष जोर दिया जाना चाहिए. ताकि कोई पुत्र अपने माता-पिता को अपने से दूर वृद्धाश्रम में न पहुंचाए. जीवन में माता-पिता का कर्ज कभी उतारा ही नहीं जा सकता है. केवल उनकी सेवा और उनके बुढ़ापे में अभिभावक बनकर उन्हें खुशियां देकर ही इसे उतारा जा सकता है.विदर्भ स्वाभिमान परिवार की ओर से दीपक प्रधानकर को सुखमय जीवन के लिए मंगलमय हार्दिक शुभकामनाएं.

माता-पिता को लेकर स्वाभिमानी- दीपक प्रधानकर साईनगर में रहते हैं. अपने छोटे भाई के साथ ही परिवार से अपार चाहत रखते हैं. पिता की यादों को मजबूत बनाए रखने के लिए उन्हों ने पिता की जगह नहीं बेचने और भाईयों को भी प्रेरित करने का काम किया. उनका मानना है कि माता-पिता की सम्पत्ति को अगर बढ़ा नहीं सकते हैं तो उसे घटाने और यादों को भुलाने का काम कभी नहीं करना चाहिए. जीवन में पत्नी और बेटियों के साथ ही परिवार को संभालने का काम करते हैं. उन्हें स्वस्थ और मस्त जीवन के लिए हमारी हार्दिक शुभकामनाएं.

विदर्भ स्वाभिमान

जाहीर सुचना	10x2	500
जाहीर सुचना	15x2	1000
बच्चों का जन्मदिन	10x2	500
शादी की वर्षगांठ	10x2	500
नाम में बदल	10x2	500
गुमशुदा	10x2	400
श्रध्दांजलि	10x2	500
पुण्यस्मरण	15x2	1000

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें
विदर्भ स्वाभिमान, छाया कॉलोनी, अमरावती
मो. 9423426199/ 8855019189

नारायण स्वामी के नाभि कमल से हुआ ब्रह्म का जन्म

विदर्भ स्वाभिमान तथा आनंद परिवार की भक्तिमय सेवा

किश्त-5, समर्पित भक्तिभाव देता है अपार खुशी और समृद्धि

कहते हैं कि श्रद्धा से विश्वास और विश्वास से असंभव भी संभव हो जाता है. कलयुग के देवता भगवान व्यंकटेश्वर बालाजी के करोड़ों भक्त विश्वभर में फैले हैं. पिछले 25 साल से उनकी भक्ति से क्या-क्या अनुभव किया है, इसको ध्यान में रखते हुए अनाथों के नाथ, निराधारों के आधार तिरूपति निवासा भगवान व्यंकटेश्वर की कथा यहां प्रस्तुत कर रहे हैं. हर गुरूवार को विदर्भ स्वाभिमान तथा आनंद परिवार की यह भक्तिमय सेवा प्रभु चरणों में अर्पित है. निर्मल मन से प्रभु गोविंदा की भक्ति करने पर इसका अनुभव आप भी कर सकते हैं. प्रथम किश्त यहां दे रहे हैं. तिरूमल तिरूपति देवस्थानम तिरूपति द्वारा प्रकाशित मातृश्री तरिगोंड वेंगमांबा की श्री वेंकटाचल की महिला से साभार लिया जा रहा है. जय गोविंदा,जय गोविंदा, जय गोविंदा. डिजिटल संस्करण www.vidarbhswabhiman.com शेष अगले अंक में

पिछले अंक से आगे- नारायण स्वामी के नाभि कमल से ब्रह्य का जन्म हुआ. सृष्टि के सृजन क्रम में उन्हों ने अत्यंत निपुणता से चारों युगों में अत्यंत सावधानी के साथ विश्व निर्माण किया. तब सूर्य-चंद्र, सागर आदि अपनी सीमाओं में विचरण करते थे.अपनी महिमा से चतुर्दश मनुओं के रूप में विष्णु भगवान के विश्वभर पालन करने से ब्रह्म के लिए एक दिन पूरा हो गया. रात होते ही ब्रम्य सो गए. ब्रह्य के रात सो जाने से सूर्य उग्र रूप धारण करके अपनी किरणों से विश्व को जलाने लगे. तब स्थावर जंगम सारे प्राणी हताहत हुए. मानो प्रलय ही आ गया, ऐसा वायु आकाश से भयंकर रूप में बहने लगी. मेघ संवर्त रूप धारण करके आकाश में गर्जन करने लगे. बिजली चमकने लग. धरती के कांपने की तरह मूसलाधार वर्षा होने लगी.धरती पानी से भरकर धारण करने की स्थिति समाप्त होने से पानी में डूबने लगी. तब हिरण्यलोचन स्वामी प्रकट हुए.श्वेत वराह स्वामी का अवतरित होना

श्वेत वराह स्वामी धरती को रसातल से ऊपर उठाकर वहीं कई दिन क्रीड़ा करने लगे. तब फिर ब्रहम जाग गए.फिर हरि ने पुन सृष्टि करने के लिए तैयार होकर श्वेत वराह स्वामी का रूप धारण किया. महाजल के अंदर पैठकर रसातल में डूबी धरणी को ऊपर उठाते समय हिरण्याक्ष ने उनका विरोध किया.युध्द के लिए ललकारा. उसने वराह स्वामी के साथ घोर युध्द किया. उस युद्ध में स्वामी ने हिरण्याक्ष के सर को अनेक टुकडों में तोड़ दिया. तब सागरों का पूरा जल रक्तवर्ण में बदल गया.तब उस जल को देखकर लोकवासी भयभीत होकर निज योग ट्रष्टि से समझ लिया कि यह सब कोप रूप धारण करनेवाले वराह स्वामी के कारण है.उनके इस रूप को शांत करने के रास्ते ढूंढते समय श्वेत वराह स्वामी ने अपने दांतों से पृथ्वी को ऊपर उठाकर लोकवासियों की रक्षा की है.तब इंद्रादि देवताओं ने इस ट्रश्य को देखकर वराहस्वामी की वंदना की है.भेरी मृदंग आदि वाघ बजाकर उनका जय-जयकार किया.फूलों की वर्षा करवायी.अनेक प्रकार से विनती करते हुए इस रूप में कहा-हे हरि, वराह रूपधारी स्वामी भयंकर राक्षस का संहार करके धरती को यहां पर लाकर आप ही पानी पर फिर से धरती को खड़ा कीजिए. यह विनती सुनकर वराह स्वामी ने हर्ष के साथ अपने हाथों से महाजलों को रोक कर पानी पर धरती को खड़ा किया. लोकवासियों के साथ-साथ इंद्र की विनति को स्वामी ने इस रूप में पूरा किया. फिर सारे देवताओं को अपने-अपने स्थानों को लौट जाने की आज्ञा देकर ब्रह्म की तरफ देखकर उन्हें जगा कर पहले की तरह सृष्टि रचने की आज्ञा दी. सारे देवताओं को विदा किया. फिर अपनी ओर श्रध्दा से देखनेवाले पक्षेंद्र गरुड से इस रूप में कहा.

वराह देव के व्दारा गरूड को वैकुंठ भेजना-धरणी के पानी में डूब जाने के कारण उसे बचाने को लिए मैंने उग्र रूप को धारण किया.मेरे इस रूप पर मोहित होकर भूदेवी कामना प्रकट की हैं मै भी भूदेव के रूप लावण्य से मोहित हो गया. इस रूप में लक्ष्मी मुझसे प्रेम नहीं करेगी. हे खगेंद्र मेरे इस रूप से भयकंपित हो जाएगी. मुझे देखना भी पसंद नहीं करेगी. इसलिए मैं किस रूप में वैकुंठ आ सकता हूँ परिहास में लक्ष्मी मुझे देखकर आप कौन हैं ऐसा सवाल भी कर सकती है. तब मुझे अपने को विष्णु बताने में भूदेवी को छोड़ कर मैं नहीं आ सकता. वराह स्वामी की बातें सुनकर गरुड ने उनसे कहा-हे देव धरणी की रक्षा करने के लिए राक्षस का संहार करने अत्यंत अभुत ढंग से आपने इस रूप को धारण किया है. आप इस कृत्य से सारे देवताओं ने आपकी स्तुति की है. इसलिए संदेह न करके आप शीघ्र ही पधारिए. संदेह मत कीजिए देव मैं आपकी वंदना करता हूँ. आपकी अनुयायिनी बनकर माँ लक्ष्मी सदा आपके वक्षस्थल में ही रहेंगी. आपके इस सूकर रूप को देखकर भी उन्हें भय नहीं होगा. हे महात्मा आप ऐसा मत सोचित आप सर्वज्ञ हैं. आपको क्या नहीं मालूम अपनी ओर से सोच कर मैंने यह विनती की है. व्यंकटेश्वर बालाजी की कृपा होने पर निश्चित तौर पर सभी की कृपा होती है. कलयुग के देवता और साक्षात्कारी होने से उनकी शरण में जाने पर जीवन में आने वाला परिवर्तन चमत्कारी होने का अनुभव हमने सदैव किया है.

शेष अगले अंक में पढ़ें

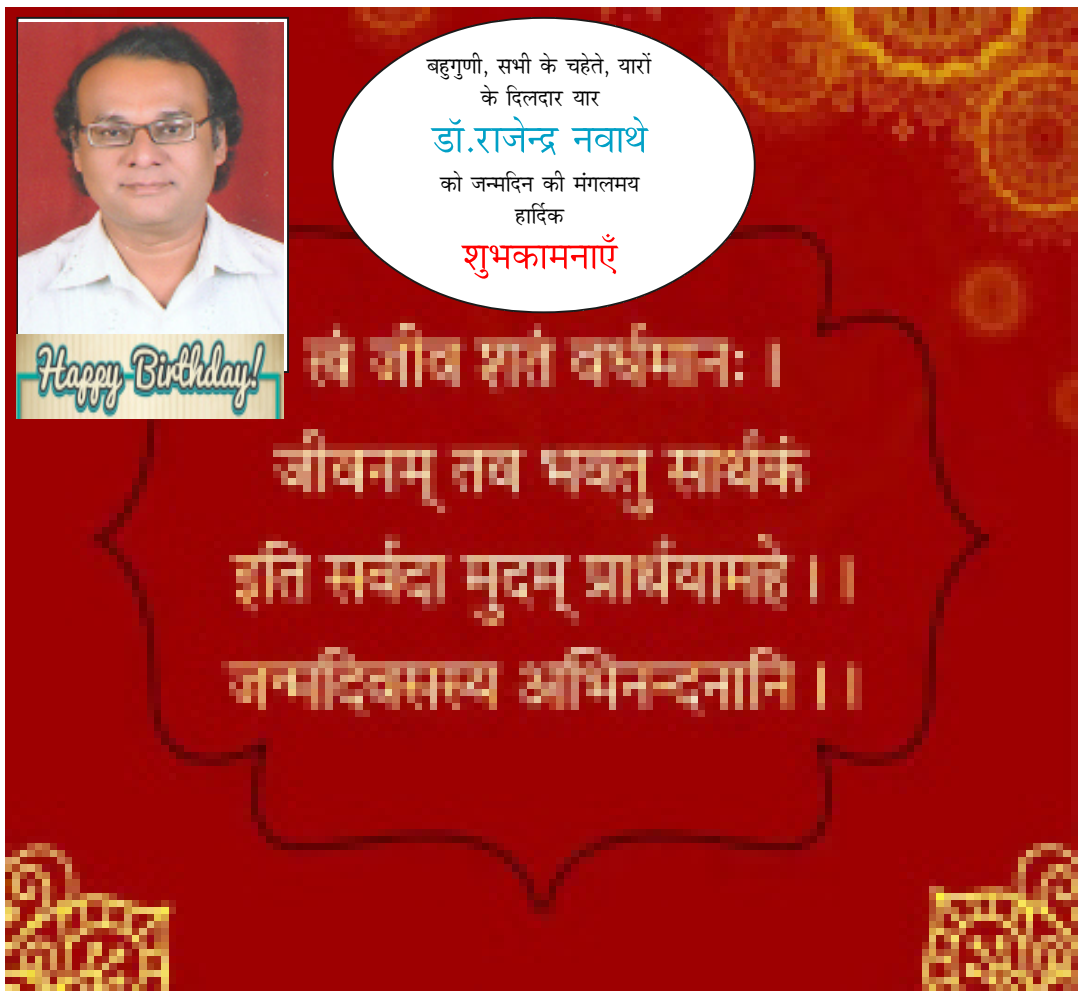

शुभेच्छुक- राजेन्द्र नवाथे मित्र परिवार, विदर्भ स्वाभिमान परिवार, अमरावती.

विदर्भ स्वाभिमान

जीवन भी एक रंगमंच है, हर व्यक्ति को अपना किरदार निभाना पड़ता है. लेकिन वह किस तरह से निभाता है, यह उसके लिए अत्याधिक मायने रखता है. सही तरीके से निभाया गया किरदार कभी भुलाया नहीं जाता है, उसी तरह गलत तरीके से निभाया गया किरदार कभी भुलाया नहीं जाता है. ऐसे में अपना किरदार ऐसे निभाओ कि तुम नहीं रहने के बाद भी लोगों के दिमाग और दिल दोनों में रह जाओ.

जरूरी नम्बर टोल फ्री

विद्युत सेवा	1912
पुलिस सेवा	112
अग्नि सेवा	101
एम्बुलेंस सेवा	102
यातायात पुलिस	103
आपदा प्रबंधन	108
चाइल्ड लाइन	1098
रेलवे पूछताछ	139
भ्रष्टाचार विरोधी	1031
रेल दुर्घटना	1072
सड़क दुर्घटना	1073
सीएम सहायता लाइन	1076
क्राइम सहायता	1090
महिला सहायता लाइन	1091
पृथ्वी भूकम्प	1092
बाल शोषण सहायता	1098
किसान काल सेन्टर	1551
नागरिक काल सेन्टर	155300
ब्लड बैंक	9480044444

पूज्य शिव गुरू शर्मा का आशिर्वाद

अमरावती- *अमरावती शहर में किसी भागवताचार्य द्वारा सामाजिक दायित्व की भावना से ज्ञानशांति उपवन ओल्डएज होम में बुजुर्ग माता-पिता के लिए स्वयं के खर्च से निःशुल्क सत्संग कार्यक्रम लिया गया.28 जनवरी से शुरू सत्संग के अंतिम दिन रविवार को सभी की आंखें नम हो गई. तुलसीमाला का वितरण गुरूजी के हाथों दीपेन्द्र मिश्र, प्रवीण बुंदेले, रवि कोल्हे, संपादक सुभाष दुबे की उपस्थिति में किया गया.*

बेंडोजी महाराज समाधि दर्शनार्थ उमड़ा भक्त सैलाब

जयकारों से गूंजी घुईखेड़ नगरी,राज्य भर से पहुंचीं 152 दिंडियां

वसंतराव घुईखेड़कर, प्रवीण घुईखेड़कर सहित संस्था के प्रबंधन को सभी ने सराहा

विदर्भ स्वाभिमान, 5 फरवरी

चांदूर रेलवे-विदर्भ ही नहीं तो समूचे राज्य में लाखों भक्तों का आस्थास्थल घुईखेड़ का श्री बें डोजी महाराज समाधि दर्शनार्थ बुधवार को लाखों की संख्या में भक्त उमड़े. इस दौरान किए गए प्रबंधों के लिए घुईखेड़कर पिता-पुत्र की जहां सराहना की गई, वहीं लाखों भक्तों का सैलाब रहने के बाद भी बेहतरीन नियोजन के कारण कहीं भी किसी तरह की तकलीफ नहीं हो रही थी. तहसील के घुईखेड़ में बेंडोजी महाराज समाधि दर्शनार्थ बुधवार को राज्यभर से हजारों भक्तों का सैलाब उमड़ पड़ा.13वीं शताब्दी के श्री संत बेंडोजी महाराज की संजीव समाधि के दर्शन के लिए पहुंचे. बुधवार को गोपाल काला का कीर्तन और भव्य दहीहंडी उत्सव बड़े उत्साह के साथ मनाया गया. श्री संत बेंडोजी

महाराज की ऐतिहासिक पालकी समारोह में पूरे महाराष्ट्र से 152 दिंडियां शामिल हुई. उनके जयकारे से पूरा क्षेत्र ही गूंज उठा.

शोभायात्रा के दौरान लेजिम, बैंड-बाजे, भजनों और हरिनाम के जाप से पूरा घुईखेड़ कस्बा भक्ति से भर गया. रुक्मिणी महिला भजन मंडल, वाई को भाग लेने वाले समूहों के बीच ईश्वर चिट्ठी द्वारा संचालित शाम की महाआरती का नेतृत्व करने का सम्मान दिया गया. उन्हें शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया गया. संजीव समाधि महोत्सव 30 जनवरी से शुरू हुआ. संगीतमय देवी भागवत कथा का रसपान संगीता करंजीकर ने भक्तों को करवाया.4 फरवरी तक प्रतिदिन सुबह 9 से 12 बजे तक तथा दोपहर 3 से शाम 6 बजे तक देवी भागवत कथा का आयोजन किया गया. बुधवार को उमेश महाराज जाधव (आलंदीकर) ने शाम कीर्तन किया.

बुधवार को कार्यक्रम की शुरुआत श्री संत बेंडोजी महाराज की भव्य सामूहिक आरती के साथ हुई. दोपहर दो बजे बेंडोजी महाराज की भव्य दिव्य पालखी यात्रा शुरू हुई. इसमें राज्यभर से दिंडियां शामिल हुई. बैंड-बाजों, भजनों और हरिनाम के जयकारों से क्षेत्र गूंज उठा. परंपरा के अनुसार, शाम पांच बजे सौ साल से अधिक पुराने इमली के पेड़ के पास दहीहांडी का कार्यक्रम बड़े उत्साह के साथ आयोजित किया गया. शाम सात बजे हजारों श्रद्धालुओं ने महाप्रसाद का लाभ उठाया. तलेगांव दशासर के थानेदार रामेश्वर धोंडगे के नेतृत्व में पुलिस प्रबंध किया गया था. 9 फरवरी को होम हवन, कलश स्थापना और गोट अम्बिल महाप्रसाद का भी आयोजन किया गया है. संस्थान के अध्यक्ष वसंतराव घुईखेड़कर, ट्रस्टी प्रवीण घुईखेड़कर और अन्य ट्रस्टी, सभी ग्रामवासी और भक्तगणों ने सफलतार्थ प्रयास किया.

मानव सेवा और धर्म सेवा जीवन में कभी नहीं जाती है

राजलक्ष्मी मेडिकल के संचालक,बहुगुणी कलाकार डॉ. राजेन्द्र नवाथे ने बताया,सर्व गुण सम्पन्न व्यक्ति हैं

प्रतिनिधि, 5 फरवरी

अमरावती - जीवन में मानव सेवा और धर्म सेवा सदैव आदर्श जीवन प्रदान करती है. इसी तरह के व्यक्ति हैं डॉ. राजेन्द्र नवाथे. सफल व्यवसायी, सफल समाजसेवी की उनकी भूमिका सराहनीय है. शहर के सुख्यात आयुर्वेद चिकित्सक, मेडिकल व्यवसायी राजेन्द्र नवाथे न केवल शहर बल्कि समूचे विदर्भ में जितने सफल व्यवसायी के रूप में पहचाने जाते हैं, उतने ही बेहतरीन इंसान के रूप में पहचाने जाते हैं. उनके मुताबिक मानवता की सेवा सबसे बड़ा धर्म और ईमानदारी से किया गया कर्म सबसे बड़ा पुण्य का काम होता है. इसलिए हर व्यक्ति को अपने स्तर पर इसका प्रयास करना चाहिए. उनके मुताबिक सेवा से जो सुकून मिलता है, वह अन्य किसी से भी नहीं मिल सकता है. बहुगुणी व्यक्तित्व डॉ. राजेन्द्र नवाथे स्वयं भी इसी सिद्धांत पर चलते हैं और किसी की भी मदद और मार्गदर्शन करने के लिए सदैव तत्पर रहते हैं. उनके जन्मदिन पर विदर्भ स्वाभिमान परिवार की हार्दिक शुभकामनाएं. सफलतम व्यवसायी, संगीत प्रेमी तथा सेवाभावी व्यक्तित्व राजेन्द्र नवाथे का. जितने अच्छे व्यवसायी हैं, वे भजन के बेहतरीन गायक भी हैं. उनके मुताबिक अध्यात्म से मन को शांति और सुकून मिलता है. सेवाभाव इतना है कि कृष्णार्पण कॉलोनी में भी सेवाभावी अस्पताल सभी के सहयोग से शुरू किया. सालभर से सेवा चल रही है. उनके मुताबिक धन दौलत व्यक्तिकी जरूरत है, इससे इंकार नहीं किया जा सकता लेकिन इसके साथ ही सामाजिक सेवा, मानवता की सेवा जैसे सद्गुणों से व्यक्ति लोगों के दिलों में स्थान बनाता है. नवाथे परिवार सामाजिक तथा नेक कामों में भी सदैव अग्रणी रहता है. नवाथे चौक, कृष्णार्पण कॉलोनी में लोगों की भीड़ इसका प्रतीक है. मरीजों को समुचित राय देने के अलावा आर्थिक स्थिति के मुताबिक सहयोग की भावना सदैव रहती है. यही कारण है कि 6 फरवरी को राजेन्द्र नवाथे के जन्मदिन पर हजारों की संख्या में मित्रों ने उन्हें जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएं दी.

उनके मुताबिक मेहनत, ईमानदारी, काम के प्रति समर्पण ऐसी खूबी है, जिससे मानसिक संतुष्टी और समर्पण मिलता है. मेहनत तथा ईमानदारी जीवन में कुछ लोगों का साथ, उनका आशिर्वाद और उनका स्वभाव सभी के लिए सदैव प्रेरणादायी रहता है. राजेन्द्र भाऊ नवाथे के घर में ही वैद्यकीय सेवा करने वालों की संख्या लगातार बढ़ रही है. स्वयं आयुर्वेदिक डाक्टर रहने के साथ ही मेडिकल व्यवसाय में सेवा को चार दशक से अधिक समय हो गया है. कांग्रेस के पदाधिकारी सहित वे अनगिनत संगठनों से जुडे हैं. इनके माध्यम से सेवा का काम लगातार चलता रहता है. अपने जन्मदिन पर हजारों लोगों द्वारा फोन, वाटसअप के साथ ही मुलाकात कर शुभकामनाएं देने पर सभी के प्रति कृतज्ञता जताई है. वे बताते हैं कि उन्हें ईमानदारी, निष्ठा तथा नैतिकता की सीख पिता

से हो मिली है.जीवन मे कुछ भी आसान नहीं रहता है. हर कामयाबी के पीछे मेहनत, समर्पण तथा संघर्ष रहता है. इसलिए इन्हें जीवन का अभिन्न अंग बनाने की सलाह वे देते हैं.उन्हें जन्मदिन पर हार्दिक शुभकामनाएं.

बुजुर्ग माता-पिता को जीने की राह बता गए शिव गुरु शर्मा

ज्ञान शांति उपवन में हुआ सत्संग, सजल नेत्रों से बुजुर्ग माता-पिता ने दी आदर्श बेटे को विदाई

विदर्भ स्वाभिमान, 5 फरवरी

अमरावती-बहुत शानदार गाना है अपने लिए जिए तो क्या जिए वर्तमान जीवन में स्वार्थी व्यक्ति द्वारा इसका अनुभव अक्षर आता है, लेकिन इसके अपवाद भी कुछ लोग रहते हैं, जो अपना स्थान लोगों के दिलों में बनाने में सफल हो जाते हैं, कुछ ऐसे ही लोगों में शामिल हैं साढे चार सौ से अधिक गौ माता की सेवा का रोज पुण्य कमाने वाले गोलोक धाम के संचालक पूज्य शिव गुरु शर्मा महाराज. मसोद में स्थित श्री ज्ञान शांति उपवन ओल्ड एज होम में उन्होंने 28 जनवरी से प्रतिदिन स्वयं के खर्चे से न केवल सवा घंटे का सत्संग लिया बल्कि इस दौरान उन्होंने श्रीमद् भागवत गीता रामायण और अन्य शास्त्रों का हवाला देते हुए यहां रहने वाले बुजर्ग माता-पिता को प्रभु की भक्ति करते हुए और किसी भी बात का शोक नहीं मानते हुए जीवन प्रभु के चरणों में अर्पित करने की सीख दी. उनके मुताबिक प्रेम सभी से करना चाहिए लेकिन मोह कभी नहीं करना चाहिए. महाराज जी के घंटे भर के सत्संग के दौरान इन बुजर्ग माता-पिता को जहां जीने की प्रेरणा मिली वहीं अमरावती में सामाजिक सेवा भाव से पहली बार किसी कथा आचार्य द्वारा अपने स्वयं के खर्चे से बुजर्ग माता-पिता के लिए इस तरह की पहल करने का रिकॉर्ड भी बन गया. हालांकि उनकी व्यस्ततम दिनचर्या में यहां तक पहुंचाना और सवा घंटे का प्रवचन होने के बाद घर लौट के लिए रोज कम से कम 2 से 3 घंटे जाते थे लेकिन गुरुजी की महानता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि उन्होंने यहां कथा करने के लिए वृद्ध आश्रम प्रबंधन को एक रुपए का भी खर्च नहीं आने दिया और माइक और अपनी स्वयं की सॉऊंड सिस्टम पर ही कथा करते हुए अपनों द्वारा ठुकराए माता-पिता के जीवन में प्रकाश भरने का कार्य किया. कथा के दौरान विभिन्न धार्मिक तथा अन्य कहानियों के माध्यम से उन्होंने बुजर्ग माता-पिता को कहा कि इन पर प्रभु की सबसे अधिक कृपा है इसीलिए उन्होंने इन सभी को जीवन में ही तमाम बंधनों से और मोह माया से मुक्त कर दिया. जीवन में जब तक माया हावी रहती है तब तक हम प्रभु का स्मरण नहीं कर पाते हैं लेकिन यहां एकांत में रहने के लिए सभी बुजर्गों को प्रभु की कृपा बताते हुए आधिकाधिक स्मरण करने और अपना जीवन धन्य करने का आग्रह किया. 6 दिवसीय इस कथा के दौरान गुरुजी को सुनकर जहां यहां के सभी माता-पिता को प्रेरणा मिली वहीं अंतिम दिन गौरी अय्यर और गणेश अयर की ओर से यहां रहने वाले सभी कर्मचारियों का सत्कार किया गया. इस शानदार पहल को मूर्त रूप देने के लिए गुरुजी का सत्कार दीपेंद्र मिश्रा, मीना मिश्रा तथा अन्य द्वारा किया गया. भारतीय जैन संगठन के ट्रस्टी सुदर्शन गांगजी, समझ जिसे भी डॉक्टर गोविंद कासट, चारुदत्त चौधरी द्वारा भगवान वेंकटेश्वर बालाजी की शॉल प्रदान कर गुरुजी का सत्कार किया गया. रविवार को सत्संग का अंतिम दिन था और पूरा हाल खचाखच भरा था. हर दिन की कथा में कोई न कोई मान्यवर ने अपनी उपस्थिति जताई और गुरुजी की सराहना की. यहां रहने वाली गौरी अय्यर को उन्होंने जहां अपनी मां मान वही अपनी मां की इच्छा की पूर्ति के लिए सत्संग करने की भी बात कही. विदर्भ स्वाभिमान द्वारा की गई इस पहल की सराहना करते हुए गुरु जी के हाथों संपादक सुभाष दुबे और वीणा दुबे का भी कार्यक्रम में सत्कार किया गया. इस मौके का दृश्य इस कदर भावक हो गया था कि सभी की आंखों में आंसू बह गए.

बुजर्ग माता-पिता नहीं धार्मिकता के क्षेत्र में आसमानी ऊंचाई हासिल करने का आशीर्वाद पूज्य शिव गुरु शर्मा महाराज को दिया और भावुक माहौल में इस कार्यक्रम का समापन हुआ. कार्यक्रम की सफलता अर्थ ओल्ड एज होम से से आत्मीयता रखने वाले निस्वार्थ समाजसेवी दीपेंद्र मिश्रा, मीना मिश्रा,प्रबंधक अरुणा पोलाड के साथ ही यहां के सभी कर्मचारियों ने प्रयास किया. गुरुवर्य की महानता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि सत्संग के दौरान उन्होंने ज्ञान शांति प्रबंधन को एक पैसे का भी खर्च नहीं आने दिया. यहां के माता-पिता के आग्रह पर केवल एक गिलास जल लेकर उन्होंने यह सत्संग सजल नेत्रों से विदाई देने के बाद कुछ पल के लिए वे भी भावुक हुए थे. कार्यक्रम में गुरु के भक्त प्रवीण बंदेले, रवि कोल्हे का उनके हाथों सत्कार किया गया. यह सत्संग हर सुनने वाले के लिए यादगार अनुभव रहा. क़ार्यक्रम के दौरान दो लोगों का समर्पण निश्चित ही अभिनंदनीय कहा जा सकता है इसमें दीपेन्द्र मिश्रा और अरूणा पोलाड की जितनी सराहना की जाए, कम है. उनकी सराहना सुदर्शन गांग के साथ ही अभिनंदन पें ढारी, पुरूषोत्तम मुंधड़ा, जगदीश साइसिकमल ने भी की.

मैं दिल से हूं सभी के प्रति कृतज्ञ

सुख्यात समाजसेवी सुदर्शन गांग ने लोगों के प्रेम को बताई अपनी ताकत

विदर्भ स्वाभिमान,बडनेरा-मेरे जन्मदिन के उपलक्ष में सुबह से लेकर शाम तक और रात तक जिन लोगों ने भी जन्मदिन की शुभकामनाएं दी बड़ों ने आशीर्वाद और छोटों ने प्यार दिया उन सभी के प्रति मैं और आनंद परिवार दिल से आभारी हैं. बचपन में माता-पिता का प्रेम और आदर्श संस्कार के कारण ही समाज के लिए कुछ अच्छा करने की कोशिश सदैव करता हूं. इस कार्य में मुझे मार्गदर्शन देने वाले मेरे बड़ों का जहां आशीर्वाद मिला है वहीं उम्र में मुझे छोटों ने सदैव प्रेम दिया है. सभी के प्रेम का ही परिणाम है कि जीवन में सभी प्रकार की खुशियां मिली हैं. इन शब्दों में भारतीय जैन संगठन के राष्ट्रीय ट्रस्टी और सामाजिक कार्यकर्ता सुदर्शन गांग ने सभी के प्रति कृतज्ञता जताई. उनके मुताबिक आज के दौर में हर व्यक्ति व्यस्त है. बावजूद इसके उनके जन्मदिन 2 फरवरी को सुबह से लेकर रात तक जिन लोगों ने पहुंचकर घर पर उन्हें शुभकामनाएं दी ,उनका सत्कार किया, सैकड़ो में व्हाट्सएप, फेसबुक तथा सोशल मीडिया के माध्यम से जन्मदिन की शुभकामनाएं दी ऐसे सभी लोगों के प्रति कृतज्ञता जताते हुए भविष्य में भी सभी का यही प्रेम बने रहने का विश्वास जताते हुए इसे अपने जीवन की सबसे बड़ी सफलता बताया. विभिन्न संगठनों के पदाधिकारी ने उनके सम्यक सदन स्थित निवास स्थान पर पहुंचकर उनका सत्कार किया और उनके स्वस्थ और दीर्घायु जीवन की कामना की. सभी का यथोचित सम्मान करते हुए उन्होंने कहा कि लोगों से मिलने यही प्रेम उन्हें सदैव सामाजिक, धार्मिक और दिव्यांग हित के कार्यों के लिए प्रेरित करता है.

इसे कहते हैं सम्पत्ति का सही उपयोग, गुल्हाने दम्पति है पुण्यवान

सफल तीर्थयात्रा कर लौटे गुल्हाने दम्पति, सभी भक्तों में अपार खुशी को मानते हैं सबसे बड़ी उपलब्धि

वीणा दुबे,5 फरवरी

अमरावती- ज़ीवनमें बहुत कम लोग होते हैं, जिनकी सेवा का सौभाग्य आम इंसान को मिलता है. प्रभात कॉलोनी निवासी गुल्हाने दम्पति सचमुच भाग्यशाली हैं, जिन्हें अपनी कमाई से प्रभु की सेवा करने का मौका मिला है.पिछले 11 साल से यह दम्पति हर साल आर्थिक रूप से कमजोर बुजुर्गों और जरूरतमंद भक्तिभाव रखने वाले गरीबों कोतीर्थ दर्शन का पुण्य प्राप्त कर रहा है. हर साल 25 भक्तों को निःशुल्क तीर्थ दर्शन का पुण्य दिलाने वाले इस दम्पति की सर्वत्र सराहना की जा रही है. बातचीत में वे बताते हैं कि एक बार कपास उत्पादक किसान की फसल बर्बाद होने से पंढरपुर का दर्शन नहीं करने की बात उनके ध्यान में आने के बाद से उन्हों ने हर साल तीर्थदर्शन की योजना बनाई. इस यात्रा पर हर साल लगभग पांच लाख का खर्च आने की जानकारी देते हुए बताया कि यह करके उन्हें अपार सुकून मिलता है. विदर्भ स्वाभिमान उनकी इस सेवा को सलाम करता है. समाज के हर सम्पन्न द्वारा अगर इसी तरह का रवैया अख्तियार किया जाए तो शायद ही किसी को धर्म तथा तीर्थ दर्शन से वंचित रहना पड़े. इस काम में रवीन्द्र गुल्हाने को जीवन संगिनी सरोज गुल्हाने के साथ ही बेटे का भी महत्वपूर्ण साथ मिलता है.

प्रभात कॉलोनी निवासी रवीन्द्र गुल्हाने, गजानन महाराज मंदिर ट्रस्ट प्रभात कॉलोनी की ट्रस्टी उनकी पत्नी सौ. सरोज गुल्हाने के साथ ही उनका श्रवण जैसा बेटा भी माता-पिता के नेक काम में न केवल सहभागी होता है बल्कि बेटे ने माता-पिता के आदर्श काम की श्रृंखला में ग्यारह साल से कंधे से कंधा मिलाकर हिम्मत बढ़ाई करने का प्रयास करे, जो गरीब हैं, कमजोर हैं और जिन्हें प्रभु ने कम किया है. गुल्हाने दम्पति द्वारा पिछले 11 साल से आर्थिक रूप से कमजोर और जरूरतमंद भक्तों को तीर्थों का दर्शन अपने खर्च से कराया जाता है. इसका अभी तक 250 से अधिक भक्तों ने लाभ लेकर इस दम्पति को दुवाएं दी. हर साल की तरह ही इस साल भी 21 वरिष्ठ नागरिकों को तीर्थ दर्शन कराने के लिए गुल्हाने दम्पति ट्रैवल्स बस में रवाना हुए. यात्रा सफलतापूर्वक पूरी कर 4 फरवरी को लौटे. उनके मुताबिक भक्तों की खुशी से उन्हें अपार खुशी मिलती है.आदर्श पत्नी के साथ ही धर्म में पति के कंधे से कंधा मिलाकर साथ देने वाली सरोज गुल्हाने के साथ गुल्हाने परिवार आदर्श परिवार है. वहीं बेटा भी आदर्श पुत्र के जैसे माता-पिता के कंधे के कंधा लगाकर प्रभु के इस नेक काम में अग्रणी दिखाई दिया. 12 दिनों के इस धार्मिक तीर्थयात्रा का समापन 4 फरवरी को हुआ. सकुशल और अपार भक्तिभाव से जितने लोगों ने भी यात्रा में सहभागिता की थी, वह भी सराहनीय है. सभी बुजुर्गों के रहने, खाने, ठहरने का सभी खर्च गुल्हाने दम्पति द्वारा उठाया गया. इस उपलब्धि के लिए गुल्हाने का अभी तक कई संस्थाओं द्वारा सत्कार किया गया.इस बार की ट्रिप में नर्मदापुरम, खाटू शाम, अंबिका माता, सालासर बालाजी, पुष्कर में ब्रह्माजी के एकमात्र मंदिर, मेड़ता, मनिवेदिड़ा, नाथ द्वारा, कर्णीमाता, पावागढ़, अंबाजी, उज्जैन, अवंती शक्तिपीठ, महेश्वर, ओंकारेश्वर, खंडवा इत्यादि धार्मिक स्थलों का दर्शन करने का सौभाग्य भक्तों को मिला. विदर्भ स्वाभिमान की गुल्हाने परिवार को हार्दिक शुभकामनाएं. गुरूवार को यह धार्मिक यात्रा रवाना हुई. सभी के चेहरे पर अपार उत्साह के साथ ही सभी गुल्हाने परिवार की सराहना कर रहे थे.आज शहर में धनियों की कमी नहीं है लेकिन इस तरह की पहल करने वालों की संख्या उंगलियों पर गिनने लायक है. तीर्थयात्रा के माध्यम से गुल्हाने दम्पति द्वारा कमाया गया पुण्य निश्चित तौर पर उनका जीवन खुशियों से भरेगा और यह परिवार सदैव खुश रहे, यही कामना.

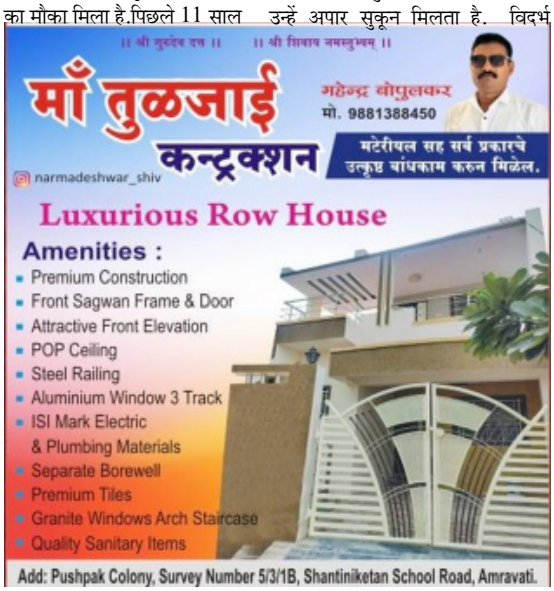

उपाध्याय ड्रायफ्रूट्स एन्ड फुडस्,जवाहर रोड के भीतर,अमरावती

ज़वाहर रोड के भीतर,अमरावती.

गुरूवार 6 से 12 फरवरी 2025

मेष

समय का सही उपयोग ही आपके भाग्य को चमका सकता है. इस मामले में कोशिश करनी जरूरी है. आम तौर पर बहुत चतुर स्वभाव के होते हैं. इनकी खासियत यह है कि ये बहुत जोशीले और जिद्दी स्वभाव वाले तथा अपमान बर्दाश्त नहीं करने वाले होते हैं. किसी बात को तब तक नहीं स्वीकार करते हैं, जब तक इनका खुद का नुकसान नहीं हो रहा हो. नयाँ साल भाग्यदायी साबित हो सकता है.

वृषभ

धार्मिक कार्यों में रूझान बढ़ने वाला है. सभी से प्रेम से रहना अच्छा रहेगा. गुस्सा नुकसान कर सकती है. स्वास्थ्य में गिरावट महसूस करेंगे। व्यापार-व्यवसाय में कोई बड़ी डील हाथ से निकल सकती है. परिवार में किसी अपने का दुखद समाचार प्राप्त होगा. पत्नी से मतभेद हो सकते हैं.

मिथुन

थोड़ी सी मेहनत भी आपको कामयाबी दिला सकती है. रिश्तों में विवाद टाले. अपनों के बारे में चिंता की संभावना है.यह स्थिति कैरियर के लिए नुकसानदेह हो सकती है. वाहन चलाते समय सावधानी बरतना जरूरी है.

कर्क

दिखावे के चक्कर में कर्ज का बोझ बढ़ाने से बचें . आपसी सहमति नहीं बनने से कार्यस्थल पर विरोधाभासी स्थिति बन सकती है. धार्मिक यात्रा हो सकती है.

सिंह

सप्ताह खुशियों वाला रहेगा. नाहक के विवाद से बचने का प्रयास करना श्रेयस्कर होगा. लीक से हटकर चलना फिलहाल जोखिमपूर्ण है.

कन्या

विरोधी साजिश में फंसाने का प्रयास कर सकते हैं. ऐसे में सतर्कता बरतना जरूरी है. संयम से काम लेना उचित रहेगा.

तुला

घर और कार्यालय के बीच तालमेल बिठाना जरूरी होगा. किसी से विवाद नहीं करना ही इस समय श्रेयस्कर है.

वृश्चिक

दूसरों को प्रभावित करने के लिए स्वभाव में बदलाव का प्रयास करेंगे. निश्चित कामों में सफलता मिलने की संभावना है.प्रयासों की निरंतरता जरूरी.

धनु

गुस्से से बना बनाया काम बिगड़ सकता है. विनयशीलता और प्रेम से काम लेने का प्रयास करें. वाहनादि धीरे से चलाएं.

मकर

घर के बुजुर्गों के स्वास्थ्य पर ध्यान दें. समय रहते कदम उठाना उचित रहेगा. अपनों से विवाद टालें. ठंड बढ़ने से स्वास्थ्य संबंधी समस्या पैदा हो सकती है. संबंधों पर विशेष ध्यान दें.

कुंभ

वाहन चलाते समय सावधानी बरतें, नाहक तनाव नहीं पालें. स्वास्थ्य के मामले में ध्यान देना जरूरी है. इस सप्ताह प्रभु की कृपा से बड़ा काम हो सकता है. किसी से नाहक विवाद करने से बचें.

वैकुंठम में जारी है ब्रह्मोत्सव

10 फरवरी को निकलेगी भव्य रथयात्रा,हजारों भक्त हों गे शामिल

विदर्भ स्वाभिमान,5 फरवरी

अमरावती-शहर ही नहीं तो विदर्भ के लाखों श्रद्धालुओं के आस्था स्थल जयस्तंभ चौक के करीब स्थित वेंकटेश धाम में 6 फरवरी से 11 फरवरी तक ब्रम्होत्सव कार्यक्रम का आयोजन किया गया है.इसमें हजारों की संख्या में भक्त शामिल हो रहे हैं. सोमवार 10 फरवरी को रथ पूजन रथ यात्रा का आयोजन किया गया है. विश्व शोभायात्रा में अधिक अधिक संख्या में भक्तों से शामिल होने और पुण्य लाभ प्राप्त करने का आग्रह मंदिर संस्थान के गोविंद दायमा एवं रमण दायमा ने किया है. कार्यक्रम का प्रतिदिन हजारों की संख्या में भक्तों द्वारा लाभ लिया जा रहा है.

सोमवार 10 फरवरी को सुप्रभातम मंगला आरती, नित्य आराधना यज्ञ, वेद पाठ, पालकी, अभिषेक, आरती गोष्टी प्रसाद, रथ प्रतिष्ठा पूजन, शाम 4:30 बजे यज्ञ वेद पाठ पक्ष 7:00 बजे रथ पूजन के बाद रथ यात्रा, नगर भ्रमण का आयोजन किया गया है. मंदिर से निकली रथ यात्रा रवि स्वीट कॉर्नर खत्री कंपाउंड प्रिया टाकीज जय स्तंभ चौक, सरोज चौक बापट चौक प्रभात टॉकीज, साबुन पूरा पुलिस चौकी धनराज लेन, सक्कर साथ, जवाहर गेट चित्र चौक जूना कॉटन मार्केट रोड से बालाजी मंदिर में पहुंचेगी. रात 10:00 बजे शयन आरती की जाएगी. मंगलवार 11 फरवरी को विभिन्न कार्यक्रमों के साथ ब्रम्होत्सव का समापन होगा. भक्तों से बड़ी संख्या में इसका लाभ लेने का आग्रह मंदिर संस्थान द्वारा किया गया है.ब्रह्मोत्सव के लिए व्यंकटेशधाम को आकर्षक तरीके से सजाया गया है. हजारों भक्त रोज दर्शन का लाभ ले रहे हैं.

वायगांव में जारी है श्री गणेश जयंती महोत्सव

विदर्भ स्वाभिमान, 5 फरवरी

अमरावती- शहर से कुछ ही किलोमीटर की दूरी पर स्थित वायगांव में पवित्र क्षेत्र श्री सिद्ध विनायक गणेश मंदिर में जारी धार्मिक कार्यक्रम का लाखों भक्त लाभ ले रहे हैं. राज्य भर के लाखों भक्तों के आस्था स्थल के रूप में प्रसिद्ध तीर्थ स्थल श्री क्षेत्र वायगांव में 1 फरवरी से श्री गणेश जयंती महोत्सव समारोह मनाया जा रहा है. यूसुफलैक्ष में यहां संगीत में गाथा पारायण तथा कीर्तन महोत्सव का आयोजन किया गया है जिसका बड़ी संख्या में भक्तों द्वारा लाभ लिया जा रहा है. रोज सुबह काकड़ आरती श्री की महा पूजा श्री संत तुकाराम महाराज

हो रहे हैं विभिन्न कार्यक्रम

गाथा पारायण श्री हरिपाठ तथा हरि कीर्तन का बड़ी संख्या में भक्तों द्वारा लाभ लिया जा रहा है. कार्यक्रम की शुरुआत 1 फरवरी को सुबह 9:00 से 11:00 बजे श्री के महा अभिषेक एवं कलश स्थापना से की गई. श्री सिद्धिविनायक गणपति संस्थान के अध्यक्ष विलास राव इंगोले तथा सुधा ताई इंगोले के हाथों श्री का महा अभिषेक एवं कलश स्थापना की गई. सुबह 11:00 से 12:00 तक अथर्वशीर्ष पाठ, दोपहर में श्री का भाव जन्मोत्सव समारोह भी दोनों के हाथों मनाया गया.

समारोह के दौरान सोपान काका शास्त्री, पुरुषोत्तम महाराज बोबडे, श्याम सुंदर महाराज निचित तथा भानु दास महाराज शेलके के दर्शन का लाभ भी भक्तों को मिला. यहां जारी कार्यक्रमों में हर दिन की कीर्तन सेवा में पंकज महाराज पवार, संजय महाराज अलोने, ज्ञानेश्वर महाराज वाघ, हरिदास महाराज पिंपरे, संजय महाराज ठाकरे, उमेश महाराज जाधव, श्याम महाराज चौबे, भानु दास महाराज शेल्के सहित अन्य कीर्तनकारों के कीर्तन का आनंद भक्तों ने उठाया. मंदिर के पुजारी पांडे महाराज जहां भक्तों को प्रसाद का वितरण कर रहे हैं वही दूसरी ओर कार्यक्रम की सफलतार्थ संस्थान के अध्यक्ष विलास राव इंगोले के साथ ट्रस्ट के सभी पदाधिकारी तथा गांव वासी प्रयास कर रहे हैं. रविवार 9 फरवरी को महोत्सव समारोह का समापन किया जाएगा अधिक अधिक संख्या में भक्तों से इसका लाभ लेने का आग्रह संस्थान के अध्यक्ष विलास राव इंगोले तथा परिवार ने किया है. मंदिर में जारी धार्मिक कार्यक्रमों का हजारों की संख्या में भक्त लाभ ले रहे हैं.रविवार को इसका समापन होगा.

गुणवत्ता विश्वसनीयता तत्पर सेवा

शालेय, महाविद्यालयीन पाठ्य पुस्तक, सामान्य ज्ञान स्पर्धा की विभिन्न किताबे, रजिस्टर, नोटबुक्स, कम्पास सहित सभी प्रकार की फाइलें,बुक्स, स्टेशनरी का एकमात्र विश्वसनीय स्थान. रियायती कीमत तथा तत्पर सेवा ही हमारी विशेषता है.

--संपर्क--

प्रथमेश बुक व जनरल स्टोअर्स, रविनगर चौक, अमरावती.

सन् 1967 पासून
अमरावती शहरात वाजवी दरात सर्वात जास्त प्लाटस्चे सौदे करणारे एकमेव इस्टेट एजंट
संजय एजंसीज्
टाऊन हॉल समोर, नेहरू मैदान,अमरावती.फोन

राजपुरोहित स्टुडियो
फोटोग्राफी की आधुनिकतम साज-सज्जा के साथ ही रियायती कीमत में बेहतरीन गुणवत्ता की विडियो शूटिंग के लिए शहर ही नहीं तो समूचे विदर्भ में एकमात्र विश्वसनीय केन्द्र.फोटोग्राफी, विडियो शूटिंग के साथ अलबम के काम किए जाते हैं.
राजपुरोहित फोटो स्टुडियो
शारदा नगर, रघुवीर मोटर्स के पास,अमरावती.अमरावती.
मो.9028123251

हर गुरूवार नियमित पढ़िये विदर्भ स्वाभिमान

घर का सपना आपका, पूरा करने में योगदान करते हैं हम

थोक की दर में निर्माण साहित्य का विश्वसनीय स्थान